साँवरिया सेठ जी की आरती

आरती कीजै साँवरिया सेठ की,
भक्तन के काज सवारे।
धूप, दीप अरु नैवेद्य देखो,
श्री थॉल सजा दरबारै।।

चौसठ कला के धनी हमारे,
सात समुद्र से न्यारे।
खीर, पूड़ी, मालपुआ देखो,
साधन ढेर पसारै।।

कुंजबिहारी, श्री गिरधारी,
राधाकृष्ण मुरारी।
श्याम रंग में रंगे हमारे,
भक्तन के दुख हरो प्यारे।।

लाखों दीप जला दरबार में,
सजते भोग तुम्हारे।
साँवरिया सेठ कृपा करजो,
नित धाम बुलाओ प्यारे।।

आरती कीजै साँवरिया सेठ की,
भक्तन के काज सवारे।

All PDF Collection
PDF Seva
© www.PDFSeva.com